

DPN 6284

ŚARABHA STOTRA

Title : १) शरभ स्तोत्र
२) शरभ साल्व पक्षिराज कवच SARABHA SĀLWA PAKSIRĀJA KAWACHA

Run. No. 6975

Cat. No. 31

Micro. No.

Subject Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 8.2 x 7.8

Folios 27 Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor नीलकण्ठानन्द राजोपाध्याय / राजेन्द्र श्रेष्ठ
जीवानन्द दैवज्ञ

Date: NS / SS / VS / KS 874, 913

Ruler / place

Neelakanthamanda

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Rajopadhyaya /

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Rajendra Shreshtha

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Jeevananda Dairaguna

Beginning, colophon, post-colophon :

⑨

□ ॐ स्वस्ति श्रीगरापतये नमः ॥ ॐ नमः श्री शरभेश्वराय ॥ ॥ स्तुत, सन्ध्या, इष्टदेवता पूजनं ॥ ॥

△ इत्याकाशा भैरवकल्पे प्रत्यक्ष सिद्धिपदे उमापदेश्वर संवादे शरभ स्तोत्रं सम्पूर्णं ॥ ॥

P. T. O.

15
= सम्बत् ८७४ ज्येष्ठ शुक्ल तृतीयायां तिथौ नीलकण्ठानन्द राजोपाध्याय शर्मणा
लिखितं ॥ शुभं भवतु ॥ ॥

(२) ॐ नमः श्री गणेशाय नमः ॥ अस्य श्री शरभ कवचस्य महादेव ऋषि वृद्धी छन्दः
श्री शरभेश्वरो देवताः ॥

10
इति श्री उग्राकाश भैरव कल्पे प्रत्यक्षासिद्धि प्रदे उग्रामहेश्वर संवादे शरभसाल्व
पक्षिराज कवचं नाम एकोन चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ॥ ॥ शुभं भवतु ॥

सम्बत् ८९३ पौष शुक्ल १५ शुक्रवारसरे ॥ तस्मिन् दिने श्री शरभ कवच
श्री गुरुभक्ति भावेन, यथाशारन्नोक्त फलप्राप्ति कामनार्थेन सम्पूरा लिखितं, दैवज्ञ
गङ्गानन्दस्य कुलपुत्र दैवज्ञ जीवानन्देन ॥

5

शरभ स्तोत्र

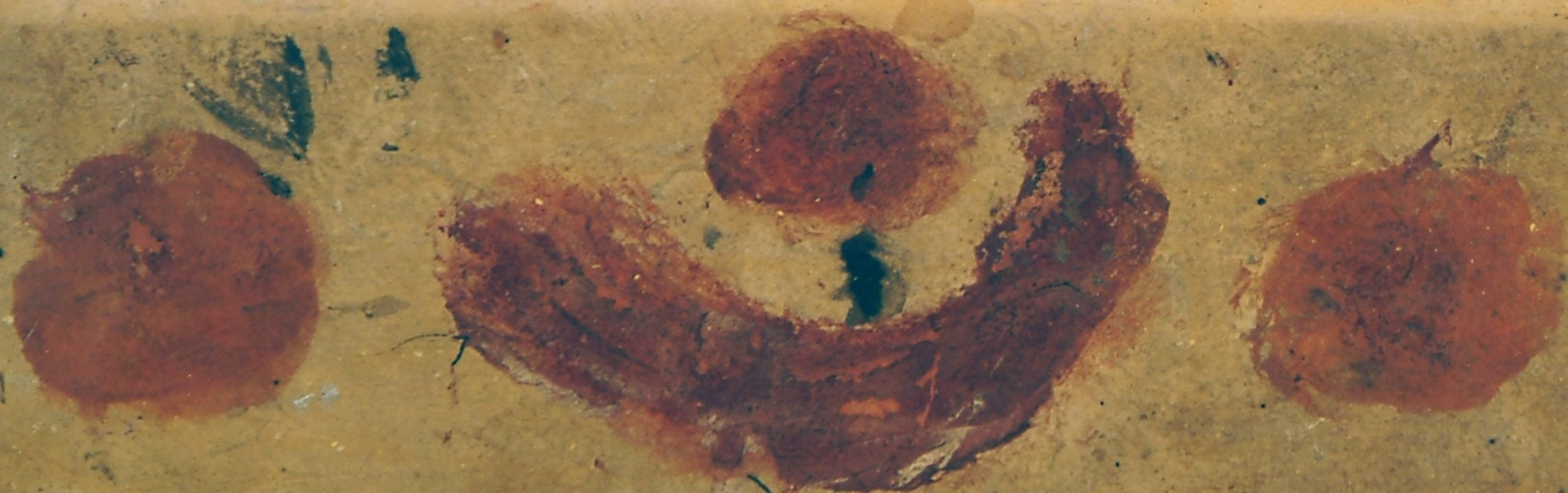
5

10

15

१० श्री २५ वंदकी

१ श्री ३



शारभ स्तोत्र

ॐ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमः श्रीगणेशाय ॥ ॥ स्नान सन्ध्या ॐ
 हृदयतायुजनं ॥ ॥ तदनन्तं गणेशाय नमः ॥ आसन ॥ अतिशय नावम
 ॥ दीपयुक्ता ॥ अथ यथाग ॥ ॐ अथ ह्यादि ॥ सूर्यादि ॥ हनुदि ॥ हनुदि ॥ पा
 नयाम ॥ न्यास ॥ सदागिव मृषय नमः ॥ गिवसि ॥ वृहती कुन्द सनमः ॥ मूख ॥
 गणेशाय नमः ॥ रुदि ॥ पुणववीजाय नमः ॥ गुह्य ॥ खंग कथनमः ॥ पादया ॥
 ॥ यद्विवाजाय नमः ॥ कीलकाय नमः ॥ सर्वादि ॥ सर्वविद्यात्सावगविनियोग ॥
 ॐ कौंकौंक दयाय नमः ॥ ॐ कौंकौंक गिवसि स्वाहा ॥ ॐ कौंकौंक गिखाये वमट्

ॐ कौंकौंक कववाय हूँ ॥ ॐ कौंकौंक ननुययवोषट् ॥ ॐ कौंकौंक कवतलयुष्टा
 ह्यां अमुय रुट् ॥ नुर्व कवनास ॥ ॐ कौंकौंक नमः ॥ गिवसि ॥ रु मूख ॥ यव ० ० ॥ न
 जया ॥ सुन २ ॥ पुवणया ॥ धौं धुं ॥ गधुया ॥ सिजनसा ॥ वीवरुड ॥ डाष्ट ॥ खं खं
 गिव ॥ अथवा ॥ खं खं गाल्वक ॥ अधदक ॥ संकट ॥ गिवसि ॥ यरं जयय रुं जय ॥ मूख
 धावान् संहावय संहावय ॥ दक्षिणवाहो ॥ इष्टानदमदम ॥ वामवाहो ॥ खं खं ॥ द
 क्षिणयादमूलान् ॥ यद्विवाजाय ॥ वामयादमूलान् ॥ रुट् ३ स्वाहा ॥ ॐ निसर्वादि ॥
 ॐ निसर्वादि ॥ ॥ मानसिक कलणकृयनं ॥ गीख अर्घा स्त्रुयनं ॥ विष्णवा र्घा स्त्रुयनं

आत्मयूजा ॥ ॥ **रदनकरं यी० संयू** ॥ खंखंखं दूंरुंरुं गवरुं गवरुं यी० जयनमः ॥
 अथ यी० संयू ॥ जीवन्मासः ॥ यागयति ॥ **आना** ॥ नकोरं सयुसन्नीतुनं यंममृता
 त्मतासातिवामं कावा ॥ आलाधिमिमीसं वदमरुयदं वन्दुनखावतं सी० खक्षानां हि
 लासायुतिरुतिविनातसमानात्मतावं सवृणीमलवर्गियुगतलयरुनं यद्विवाजं न
 मामि ॥ वन्दु कृत्रिदिदृष्टिः कृलिगनखमूखध्वंलसू गुजिदः कालीदग्गवयदो
 रुदयज० वागलेववावाउवागिः ॥ **उ** नूक्काद्याधिमृत्युसमवतववखगपुंडवातातिव
 ग ॥ **सं** रुलसिर्वगिपून्सजयतिगवरुं ॥ लव० यद्विवाजः ॥ **मृ** गल्लद्विगवीवगयक

वि०

त्यां वयनादिजः ॥ **अ** धवकुपुदुस्याद उद्ववकुपुदुर्जः ॥ कालान्कदरुनायम्या
 नीलजीमूतनिधनः ॥ **अ** रुदायायवूडाय नमः ॥ गवरुमूरुय ॥ **उ** वं धालायूजयं ॥
 पूजामालरुं ॥ यादयाः यदार्घ्यं ॥ **उ** खंखंखं दूंरुंरुं गवरुं गवरुं वाययागार्घ्यं समर्थ
 यामिनमः ॥ **उ** वं युकावगकर्लुयः ॥ ययवावेदवं संयू ॥ धूयदीयनेवशजल
 धना ॥ रुलमूलतामूलदक्षिण ॥ नूतानिधूयदीयनेवशरुलतामूलदक्षिण
 गवरुं गवरुं वायनमः ॥ समर्थितममु ॥ ॥ **त** तः ॥ आवपुयूजामावरुं ॥ रुंरुं यूरुं
 गृहीत्वा दवायनि ॥ **उ** वन्दुयनमः ॥ **उ** सूर्यायनमः ॥ **उ** रेववायनमः ॥ **पि** का ॥

15

10

5

15

10

ॐ इन्द्राय नमः ॥ ॐ कालाय नमः ॥ प्रिकानाय नमः ॥ अरुदल ॥ चन्द्रादि ॥ द्वाद
 ल ॥ मदनाय नमः ॥ वक्रवा मण्डाय नमः ॥ मादिनो नमः ॥ दाविनो नमः ॥ ग
 द कर्षिनि काये नमः ॥ वागे नमः ॥ वमाये नमः ॥ रामाये नमः ॥ यलिपुनो नमः
 ॥ गल्लाय नमः ॥ क्षातिनो नमः ॥ अरुये नमः ॥ वाड ॥ दल पूजा ॥ वक्राये नमः ॥
 यवाये नमः ॥ विष्कराय नमः ॥ मायाये नमः ॥ वावा रुये नमः ॥ पृथिवीये नमः ॥ व
 र्णनमः ॥ लिवाये नमः ॥ अग्नि ॥ नमः ॥ वीवरुदाय नमः ॥ रावरो नमः ॥ लिवा
 ये नमः ॥ ॥ गीकवाय नमः ॥ वृदाय नमः ॥ कालागि वृदाय नमः ॥ नूति पूछ ॥
 न २ येनमः १

5

५५ २

पुथमरुयन ॥ ॥ गणाय नमः ॥ जमाये नमः ॥ रेववाय नमः ॥ वीवरुदाय न
 मः ॥ वाडवाग्रय नमः ॥ मरुमायाये नमः ॥ नूति संयूछ ॥ वाडरुयन ॥ वक्रादि
 मारुसंयूछ ॥ अरुका ॥ वक्राये नमः ॥ जाद्रये नमः ॥ गणाय नमः ॥ नूति
 संयूछ ॥ धूयदीयने वंश रुलतामूल दक्षिण सर्वाय वा नै समर्थयामि ॥ पुनः धूय
 दीय ॥ ॥ नुतानि गन्धधूय धूयदीय रुलतामूल दक्षिण सर्वाय वा नै १ गवरुधना
 य समर्थित मन्त्र ॥ धूयदीय यहाला ॥ दीय संयूछ ॥ आवम्या ॥ यातायाम ॥ दग कालो
 संकीर्ण ॥ अमूर्क मना सिद्धार्थ ॥ श्री श्री श्री गवरुधनायार्थ ॥ यथा सर्वथा कजयमर्क
 क

विष्णु ॥ न्यास ॥ माला यूजा ॥ मनसि दवंष्टात्वा जयं ॥ नृकविलुन ॥ यून ४ जयं निव
य ॥ गुक्कतिमनु ॥ यून ४ यजय ॥ स्मृयाया भदिकैय ॥ ०७ ॥ गनरुध्वनमनु ४ ॥
उं क्रो क्रो द्यै न ० ० ० पुन २ धा धौ सी जै रु वी न रु दु ख ख नि व ख ख ग ल्व क सं क ट
पु व ट पु व ट जै रु य २ धा वा न स दान य २ द द्वा न द म २ ख ख य द्दि वा जा रु य रु ट ३
खा रु ॥ ॥ क्रुतिमनु ४ ॥ निव द य ७ ॥ ॥ स्मृयाया भदिकै क य ७ ॥ य ७ म्य ॥ ॥
द वा धि द वा य ज ग न्न या य ॥ नि वा य ना ली क नि रु न ना य ॥ स द्वा य री मा य ग द धि वा
य ॥ न मा मु दु र्य ७ ॥ ग न रु ध वा य ॥ रु वा य री मा य रु वि धि वा य ॥ रु वा य ग न्ना य य वा य

नाय। मृजयन्दाय। तिलावनाय। नमामुदुख्यंगवरुष्वनाय॥ गीतांशुवृजयदिगं
वनाय। सृष्टिस्त्रिभिर्धंगनकावनाय। जटाकयालाय। जिहन्धियाय। नमामुदुख्यंगवरु
ष्वनाय॥ धीकालकपुत्रयवनाय। कयालपूलांककनाम्बुजाय। रुजङ्गुवनाय।
यवनाय। नमामुदुख्यंगवरुष्वनाय॥ गमादियकाय। यमानकाय। यमादियाग
हकसिद्धिदाय। उमाधिनारायणयवनाय। नमामुदुख्यंगवरुष्वनाय॥ पाण्डिया
गाहकवर्जिताय। क्लीवृताद्यस्मन्पूर्वकाय। गुणदिहीनाय। गुणप्रदाय। नमामु
दुख्यंगवरुष्वनाय॥ कालाय। वेदामृतकन्दलाय। कल्याणकीर्तनकावनाय।

15

कृलायसूत्रायस्वयं गाय नमामुदुह्यं गवरुष्वनाय ॥ यक्षननायखिलरास्कना
 ययक्षदण्णुयिदण्णकनाय ॥ यक्षकनायायजगद्धिताय नमामुदुह्यं गवरु
 ष्वनाय ॥ नीलकण्ठायनूदाय निवायणनिमोलिन ॥ रुवायरुवनाणाय यक्षिना
 जायतनमः ॥ यवात्यनायद्यानाय ॥ रूवयवमात्मन ॥ सर्वयनिर्मलांगाय ॥
 ल्ववायनमानमः ॥ गङ्गाधनाय ॥ वाय यवमानन्दरंजस ॥ सर्व्वनायदवायणव
 लायनमानमः ॥ यवदायववाङ्गाय वामदवायगूलिन ॥ गोत्रीणाय नीत्रिणाय नि
 विजायतयनमः ॥ कनकज ० वपीना दुदयानात्मदेन यथतनिखिलपीजानाव

10

सिद्धनजाता ॥ गवरुसमववाणो जाहिनः ॥ सर्व्वयाया दनिगमिरुदुयालाणात्वव
 गयुरात्वं ॥ सर्व्वगवाधिकणान्तमूर्त्तकतायवाधाययवात्यनणाविनीगविष्ण्विवि
 धायिनं न नमामुदुह्यं गवरुष्वनाय ॥ दंष्ट्रानखांशुः ॥ गवरुः ॥ सयकः ॥ वदुर्दुज
 वासुयदः ॥ सक्तिकाटीवर्गं ॥ गन्दुधवानृसिंहकातायदास्रडियूहामुर्गुः ॥ दू
 कावगवरुष्वनासुववगः ॥ यादादिवानवाकः ॥ यादाकसुनृसिंहविगुरुधनः का
 लाग्निकाटिशूतिः ॥ विष्णुक्षौरकवः ॥ गन्तिवनिर्गवक्षन्दुमूखीमुतागङ्गाधनय
 वडयदः ॥ सधावियुधमुनः ॥ मृगदलांशुलयूसं सयदं दंष्ट्रानखं नाखांशुदुज

5

[illegible][illegible]

सम्बन्ध ८१४ ईष्टपुष्पकृती न्याति एषी नीलकण्ठनन्दनाजायाध्यागर्मण
लिखिते ॥ पुरुरुचयदु ॥

ॐ नमः ४ धीग (८६५५॥ नमः ४ धीग नर क व च स म हा द व
म वि वृ ह गी च नृ ४ धीग नर च वा द व ता ४ ॐ वी र्ग यु क ति
हा कि ४ य कि ना क ति की ल कं ४ धीग नर व न य सा द सि (ध्व) (थ)
क य चि नि या ग ४॥ ॥ ॐ स्व र्वं नृ रु षा ल्यां नमः ४॥ धुं धी त र्ग
नी ल्यां नमः ४॥ सर्व ४ क र्म हा न य म मि मि दृ षि ध्व ४ धी न
म (ध्व) मा ल्यां नमः ४॥ धी नर सा ल्या य न ना मि का ल्यां नमः ४॥

य कि ना का य क नि षा ल्यां नमः ४॥ कूं रु ट् सा हा क न र ल य षा
ल्यां नमः ४॥ ॥ न व द द या दि व उ न्ना म ४॥ ॥
त त ४ ध्व न् ॥ च द्वा क्का वि कू लि हा न र व व न च य यु कि का
का ली उ र्ग च य क्का द द य क ४ न (म र न वा वा उ नि) उ न र्का
मृ य ४ धी नर व न र व ग य यु वा ना मि व ग ४ सं ह र्ग सर्व ४ क र्म
क य मि धी नर ४ सा ल व ४ य कि ना क ४॥ उ वी ध्व र्म म ह र्द र्म
वा ३

टिगवसदधनं सामसूर्याग्निभर्तृवर्कवर्कं शिखलं हानमृदाल
 गदाहाकुलीगिवहन्तं हंस्वर्गवर्ककपालं सकलरुच्यहर्नकुन
 दानादिहसं संहानेवानुचर्यं सकलत्रियुक्तनयाद्यसंहानचर्क
 ॥ ॥ श्री० ॥ ध्वनंतुवाच ॥ कथामिदृष्टद्विष्टि सर्वनक्तम
 दुर्गाहानलंकवर्चं नाम्ना चतुर्वर्नरु लयुदं ॥ हानलं ध्वनसा
 त्वाण्य कवचस्य सदाष्टिव४। मृषिचुन्दस्य वृहती वाचत

ॐ नमः शिवाय ॥ देवतायुतवावीकं युक्तगीताकिन्वात। कील
 कं यन्निनाकृति सर्वत्रकाकनाविशु ॥ यन्प्रयागेहमं यथ
 सर्वेष्टाकृतिवावटी। चतुर्वर्गार्थसिद्धि (थ) विनिशागस्यरा
 वना ॥ ॥ कृत ४ ध्वनं ॥ वत्तारं सुयुसंनं शिनयनममृतां म
 कृतीषारिनामं। कान्धर्मराधिनीर्हा वनदमलयदं चतु
 नखावसन्ती। ह्येवध्वसिलेष्टम युगिहृतविधिना रासमान

15

श्री २

स्मरणं धर्मे धर्मसाल्वेर्धं युदागनालयहर्नं यद्विवाकं न मा
 मि ॥ ॥ धीहि वउवात्रा सिव ४ यनर ४ या पु माया धी हानु पु सु
 तां पिना की द क्रि दी या पु वामया (वर्मि ह व न ४ ॥ धि स्वायं या तु
 म धा मु निरि ख र्ज या पु हा क न ४ ॥ ॐ व न वा व द र्ज या पु कुं जामं भुवो
 (ध्व य वा न क ४ ॥ यु वी या तु म म स्का युः क य र्ज या पु ला व न ।
 धि वाम (अ पु यो या पु वा गी हा ४ या पु ल मि की ॥ ना म या म

10

5

वृषा वृषा नासां (य वृष र ध्व ४ ॥ स्म वा वि ४ या पु म ता ल्वा ३ ॥ ३ ॥
 या म्म के व त्म ली ॥ या पु म्म य ३ या द ना त् वि व कं या पु र्ग न न
 न । य न म धा ४ क या लौ म कि क्की या पु क या ल र ट न ॥ क र्क य धु य
 ति ४ या पु धू ली या पु ह न म म स्का न्द द र्ज ह न ४ या पु धू र्क टि य
 तु म तु की ॥ वा रु द र्ज म हो द व ४ ॥ ॐ ध म ना म य क र्क र्क र्क मू र्क र्क
 (ध्व र्क ग ना थं ४ यु का वृ च न्द (हा व न ४ ॥ म दि व (ध्व रि न ग म

म ६ प २

धि

5

10

15

लीमयापुकनद्वयं। कनयसुंमृउ४यापु नृडोऽनुद्वयंमम। उ
मासहायसुकेनो। रा। (ममयापुम। धुमो॥ ननामिककवाला
स्य। कालकपुकनिष्ठकागभाधवाकुलिं४सर्वा४प्रयमयानन्य
निम॥ वक्रसुत्यनृष४यापु वक्रोदकधवाकक४। अथावाह
दयंयापु वामदवसुनद्वयं॥ नीलदकक४। नयापु नारिनावा
यद्यपिर्य। वक्रोयक्राकट४यापु वक्रिया। (ममहावल४॥ स

आगागकटिंयापु यष्टराकुनुलेवव४। माहनागयनयापु
गुर्तममकिगन्धिय४। उद्वनगालिन्दर्दी। यष्टीयष्टरध्वज
उनयगर्भरुव४यापु कानयगर्भरुवाकक४॥ कूकाव४यापुम
कंध। रुद्रावाममगुल्यका। यद्राव४यादयष्टम। वष्टावाधि
(ममकुल॥ स्वाहाकावाकुलि४या। (व। स्वधाकावाकुलिमीन
। त्वनिग४सर्वसिद्धिम। नामक्याशुसिंहकिण्ण॥ त्वनयापु

मना वग ४ काल जिन धिरे ममायुष्टि दया ३ ममांसं मदा मत्त
 सिद्धा धनु ४॥ ॥ सदा त्मास्ति चर्यया ३ मक्तात्ममङ्गल्य ३ ४
 दुर्क वृद्धि कन ४ या ३ वृद्धि वा वा मधी धन ४॥ मूला धानी वृद्धि
 रु रगवान् न ४ न ४ धन ४॥ स्था धिक्ता न वृद्धि या ३ मणियू न ह
 निधिय ४। नना हर्ग माल व ४॥ विद्यु द्द की व ना य क ४॥ सर्वे
 नय दा दे वा ललाटं मस दा धि व ४। वक्ष न न्ध महा दे व य क्रि ना

शानमजः ३

का शिव ला कृतिं ॥ सर्वे ला क वही का न ४ या ३ मां य न ४ वृद्धि द्वा व द्वा
 मृष्टि व ना री ति हस्त काला ३ मं नि री ॥ विरु य सि द्दि र ४ या ३
 धी न्दी च क व र मि क्रि ता ४। कि ४ ल क पा ला सि हस्त ४ सो दा मि
 नी य ल ४॥ रु धा य का म हा री म ४ या ३ वे ध न नी दि ४। द धु म सि
 मृ ४ ल ४ ल पा ४ ४ क नान्ध क ॥ य मा न क का रि ना य का नि ४
 या ३ नि ४ री मी ॥ ख न ख टा मि य न ४ हस्त ४ ४ वि म द्द न ४॥ न

15

यनागिरयापुयक सदायाने मृतीदिही। याहमद्वहमधन वीहमन
 याहिषया (ह) नीयवायग ॥ दनिडा लानिहीयाया दानुहमनिहोम
 त्मकिताधगायक वेवादान पुगाउर्जयत ४ खग ॥ चयुवग ४ हि
 वयाया त्मकर्ममावगीदिही। गदाक्रमयवनालीति कर्वालाकं हिवा
 यतः। कनका कामहातगायापुकी वेदि कीदिही॥ गिरीला हि कया
 लानि दीक्कल विग्रया मृत ४। रुमाइ लिंगसच्चा (न) उहिपाः
 दिगं

10

5

5



5

10

15

ॐ नमः ॥ ताल ॥ ॥ रयं रुतः ॥ यं वं लं रुं सो रुं ॥

त्वयनातितां॥ कृपाकृपुसकौलाक कमधुल कबाम्बर्गोडुर्दपायु
 मिनायक॥ सर्वरुतदिगवत॥ हंस्वचक्रगदारीति हस्त॥ यद्य
 यगायया॥ नीलाम्बुज समायक॥ यातालयात्वनोतं जतीजनक
 विदि॥ ४ पायु सालवाचनू सिंदुकिता॥ ६ वर ४ पायु सक्षाम
 यद्वेनिकुताकक॥ सर्वसोलाग्धद॥ ४ पायु कायत्वप्रसवदि
 ॥ सर्वसंन्यद॥ ४ पायु धनधान्याधिकममासकानद॥ सुतान्

३ यगनायकनानि॥ वध्वद्विकन॥ ४ पायु गृहममवर्धकन
 ॥ यमयममवर्धन॥ ४ पायु नार्थममदिगम्वन॥ नार्थु॥ ६ नकि कन॥ ४ पा
 ३ नार्थनीधर्मदायक॥ मार्जनद्वहन॥ ४ पायु समकर्मदिलन
 व॥ ४ पायु मसर्व मवत्तागिगयश्रव॥ ६ तयध्वनक
 र्यकत्या प्रतिस्तानसमादित॥ ४ पायु यद्विनिस्वर्षु रुदिस्वसा
 लवध्वनार्थमघातका॥ ४ पायु कयवद्विकारग॥ ६ तस्वना

15

मी०

5

मिश्र

भविष्यत् ॥ ममास्तु न सार्येन मान्यज्ञानमव्ययम् । कामक्रोध
महालाह समाहमदमत्सवा ॥ मास्तुभकापि सर्वदा र
गवानकन्येन निध ॥ दानेन श्रुतविशेषा यद्विनाशदया
निध ॥ दिदिभयं न लारुकि युदागस्मिन् न ४ वन ४ ॥ (ग)
वीवल्लरुकासाध कालवृटविषाद न ४ । मास्तुभकापि सर्वदा र
(ध) शिष्येन श्रुतकानक ४ ॥ सास्तुवदगगनाथ सर्वदा र तदि

गिर ४ । पाहिर्मा ननसा शोना नृणा न्नाहायना ४ । या ॥ कालरु
वविशेषा विध्वनकायनायदा न क्रमसक शो न त्या धान्यना
हिमिमां युगा ॥ यद्विनाशमहादेव युदागस्मिन् विनाश न ४ ।
रुस्तुभनद्वर्तवम् युदागस्मिन् विनाश न ४ । युदागस्मिन् विनाश न ४ ।
४ रुदायुदवकानका सर्वाचार्यनिशका मानुहा विनाशका
॥ तसर्वसास्तुवदस्य महालायधवृक्ष ४ । नद्विनाश निमिष

द्विन यावका वृत्तवृत्तवृत्त यन्ननाडादि (रामन्या हम् तत्कात्रा दि
 तलशिवे नो ४। सत्कर्म विद्यु कर्मा ३४ हम् कर्त्तु नय वा य ८४
 ॥ तसाल वहा हस्का य स्व न्निरिन्न दहि न ४। यत्तु गुरु तलया
 म्यां यो हम् म्यां ययी त्वर्वा ॥ त्वर्वा विष्णु न निर्दृष्ट या य को हम्
 यो मन्त्रि य मन्त्रि य गिरि य गिरि विरवा गि कुर्य त्वर्वा ॥ त्वर्वा दात्रा
 नय वर कं साधकं मी विव किर्न यत्रा कमन्त्रि सन्धु म अगच्छ

नुयवा हगा ४। त्वर्वा सममलधी नं तर्क्य की वल नवे ४॥ मनसा
 या नम न्य के तत्त्वा नु नु म उ क हम् त्वर्वा य न वे मा र्ज ४। स
 ५ न्वं कया पु न् यव दन्ति य नी वा दं यान्तां ४ विष्णु रुच नु न
 ॥ मनसा कर्म हम् वात्रा य ०० क कृति ३ स हं तम हा वा ग (हम्
 का (श्री यत्तु त्वा धु वि वा कृ या ॥ मदीया निय व दं थी नि य
 ही पु या वला क र्ता तल हम् द व न यो को त्वर्वा वी दी व न कृ या

मदीयं द्रव्यमादाय अगच्छन्निहतस्तना ॥ सिंहविषादासं व
द्रा सौगच्छन्नुपदक्षिणी सीमातीता ये यो वा ना ॥ गृहीतदद्युसं
सया ॥ अवधमवयवास्तन अगच्छन्नु द्विवाङ्गया ॥ तस्तना निम
ग ॥ ४ स्वाका धाना वसुधना धिका ॥ यकिना गयवा कृष्ण सभा
नृ ॥ गच्छन्नु मङ्गु ॥ समा दतयवा (ध) द्या ॥ २४ म तीता अगस्तना
॥ ४ ॥ वरुहा दगा कृष्ण सागच्छन्नु मङ्गु ॥ चीना गृहीतु म
न

यकासमागच्छ किमद्गुणसालवहायकोक्तं चागर्गकृत्
सत्यं ॥ ६४ ॥ किं विवक्तिर्नरकं त्वदं प्रियं न गत्यं ॥ चंद्रवं
ये सदयाम् ॥ सायाक्ति ययमीयनी ॥ यदि हीकाष्टकयकुल
खाद्यलायमध्वमाकांमर्तुलिरित्वा ॥ ६५ ॥ कथं दानाध्वसा
धक ॥ ६६ ॥ उदहमखंसहसुं ॥ नरकध्वयकयल्लिहि ॥ नखाहन
कय ॥ ६७ ॥ बाणीयविमदि ॥ ६८ ॥ मान ॥ ६९ ॥ ननु दकि
सर्व ३ ३

क्षतिमृगं कथं न। नागनिग्रह (दायास नागां) ग्रयं यदि द्युत
 ४॥००॥ गिगुर्गं महामर्कं यत्र मसर्वसिद्धिर्दे। हा नरु हा ग्ये क
 वचं चतुर्वर्गं रुल्लयदं ॥ प्रयहं पुनियं कं वा पुतिमासमथा
 विवा। या कथं त्यतिवर्षम्वा च नरु ४ सहा वारु वेण ॥ नर्वदि
 कथं गंयं सां यातकं वा यातकं। सर्वे विलयमाप्नोति न विना
 मिमि न यथा ॥ दहमर्दं या कथं त्रिंशं यातवत्कायसाधक ४

॥ सर्वसिद्धिं समासाद्य देहान्ते ४ सहा वारु वेण ॥ शिकारं
 अत्र यत्र नु कथं वा दहावर्षिकं। कायना न न वे देवि जीवम
 का नर्भं संहाय ४ ॥ हा ग वानं कथं त्रिंशं मगुर्लं या व वा न न
 मानिमादिगुह्यन्याय विचनं त्वं त्वं कया सदा ॥ भूगुलादि
 दर्बं अत्रिगुह्यनानि च गुर्दहा विचनं कामवेत्सर्वैः यश्च माना
 यथा सर्व ॥ कथं त्रिंशं मगुर्लं नर्भं शिमा संयां सहस्रकं स

मर्त्यः

हसाहावरुहासा सावृणं सरुगमिह ॥ सत्पासं या कथयद्वं यु
यतमुदुवुत ॥ मइयेधनकेम्विं सहसिद्धियुदायक ॥ म
मलाकनसंयुश विष्णुलाकत (थेवच ॥ वृक्षलाकनम
सर्वेश्वरनिवायमे ॥ ॐ न्यामियमयकीहा कलहातवने ॥ ४६ न
॥ साभसोत्रकलसी (हो दिहापाले ४ युयुशग ॥ आदिश्याम
यथीडा वेधधी रुनरागर्जवा ॥ युशगसगृहे ४ सर्वे ४ ६ निवा

कल्वंगिरः पुलस्त्ये

सकपुलि ॥ नैकतिवयनीसा यलहाणीमनीचिरि ॥ ४६ क
कथयदुवुत ॥ यागिनीयलि ४ सयुशग ॥ रुनवे वृक्षलाकन
नादिश्याम ॥ ४६ दिर्जने ४ माहा ना (गु दिश्यामु दिव्य
वाहन ॥ ४६ रुनवे मीहावत्ने ४ काम (धनसुनदुम ॥ सत्रिद्धि ४
सागने ४ (होले देवगालि सुपाधने ४ दानवे नाकसे ४ नश्य ४ क
ने ४ सिद्धगन्धर्वकिन्नने ४ ॥ यकिविशाधने ना (गु नयवालि ४

ययश्च ॥ वायु (लोकाय) ययश्च ॥ ४४ ॥ देव नो यय नातिरि ॥ यय
 यय (गोया) ले ४ ययश्च सर्वं कुरु रि ॥ ४५ ॥ अयस्मा नय ह सीम
 नन्म कुरु यय ना कुरु ॥ ४६ ॥ यय च न ४ मय ४ वय ॥ ४७ ॥ यय
 कुरु सय ४ ॥ काला व कुरु स मा हा न ॥ मुय ह ४ या य वि कुरु म ॥ ४८ ॥
 नयुतयि ४ म वा य ॥ गुरु स सर्वं ययश्च ॥ किमय व दू ना दे वि त व
 वयुयथा तथा मया च विष्णु ना च व विष्णु कुरु च याल्य ॥ ४९ ॥

वयुयथा च गिना लक्ष्मी वयुयथा च वयुयथा च ॥ ५० ॥ ग (दाय) ना दि या
 गी नु ॥ या गिनी रि सया ल्य ॥ ५१ ॥ ०० द यय कुरु स ॥ असा धी
 ने व वि यय ॥ क व च नु म हा म नु ॥ कय कुरु स ॥ दे न कुरु म ॥ ५२ ॥
 ट न म न व कुरु ॥ वि ष य व वा कुरु स ॥ न न ॥ योग स न वि व द्यो ॥
 सर्वं श्री ४ म न दि द्य र व ॥ या कय कुरु व च नि र्य ॥ शि काल क्ष म
 य व कुरु ॥ सर्वं सिद्धि ॥ समा चि य ॥ सह सा सा ध का कुरु म ॥ ५३ ॥ दे व

देवमहादेव सर्वकामसुखानिधायादिमा सर्वदास्वामिन्
 युसिदसगर्गमम ॥ १०४ ॥ ॐ तिष्ठि श्रीकाठारे नव क
 ल्ययशु कसिद्धियुद्धु मामहं ध्वनं सर्वदा ददातु सा स्वयं
 गुरु कवचं नाम नृकानवस्था निहात मां ध्याय ४॥ ॥ ॐ नमः
 रसम्भ ॥ २१३ ॥ योष ६५ ॥ १५ ॥ ६५ ॥ कवा न स न ॥ ॥ तस्मिन् दिने
 ६५ ॥ ६५ ॥ कवचं ६५ ॥ १५ ॥ ६५ ॥ कवा न स न ॥ ॥ तस्मिन् दिने

या फिकामना (र्थ) प्रसंग्यं निखितं देवकृगमानन्दस्य व
 लयशुद्धे वरुणी वा नन्दन ॥ यदि स ह्यमस ह्यवा ॥ यादृशयुक्त
 के दृष्टा तादृस्य निखितं मया ॥ यदि तु ह्यमस ह्यवा मम दाया
 नदीयते ॥ ॥ ६५ ॥ ६५ ॥ कवचं ६५ ॥ १५ ॥ ६५ ॥ कवा न स न ॥ ॥ तस्मिन् दिने

15

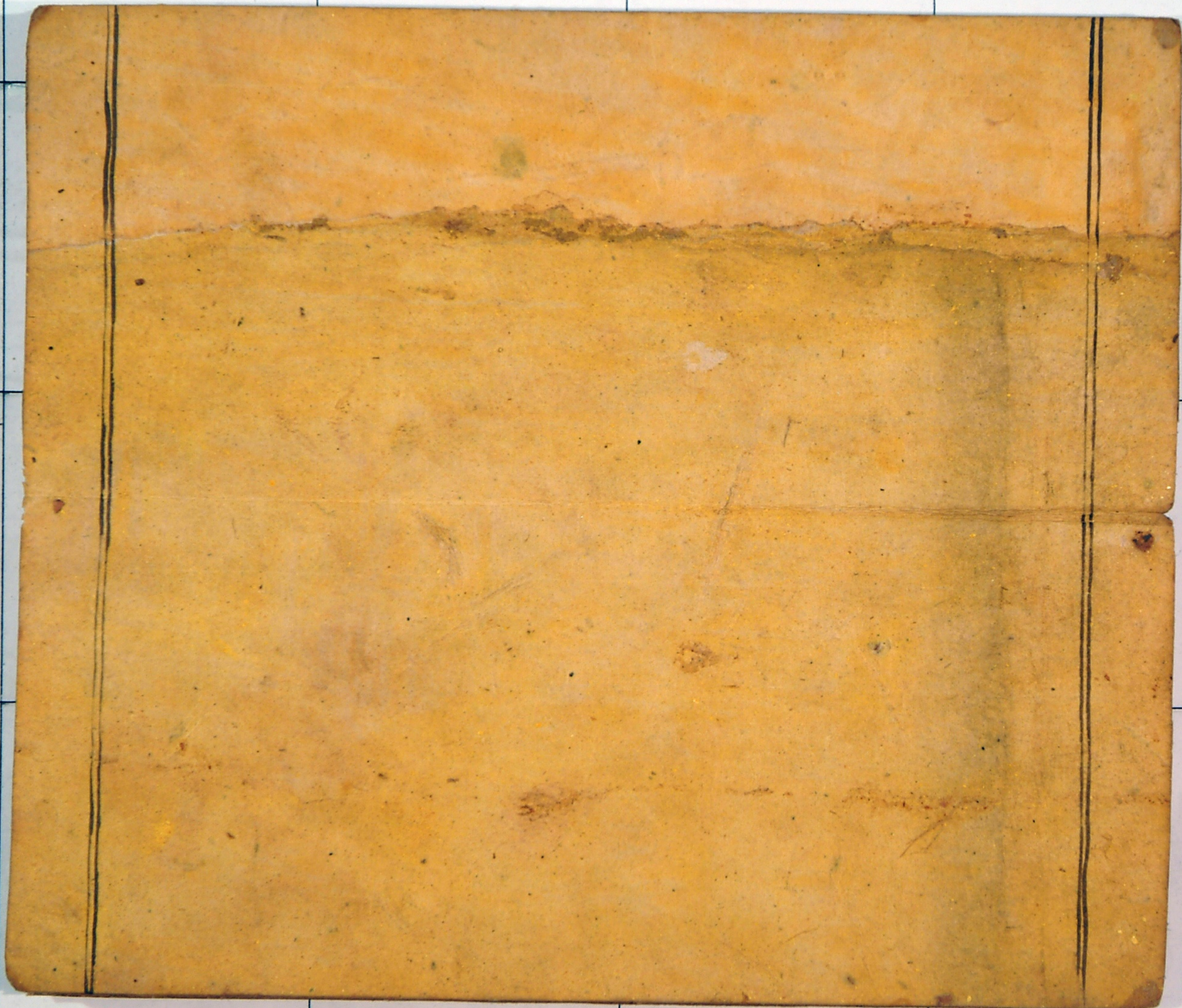
10

5

5

10

15



15

10

5

5

10

15

15

10

5

5

10

15